IMPACT FACTOR 7.50 (SJIAI)

बिहार शोध समागम
BIHAR SHODH SAMAAGAM

Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 3 July-September, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
https://doi.org/10.5281/zenodo.22774487

ISSN : 3048-6971

पूर्वी भारत में शंख लिपि : बिहार क्षेत्र के विशेष संदर्भ में

डॉ. देवेन्द्र कुमार

भारतीय उपमहाद्वीप में भिन्न–भिन्न लिपियों के लिपिशास्त्रीय अध्ययन में ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपि के समकक्ष एक अत्यन्त अलंकारिक लिपि भारत के विभिन्न पुरास्थलों से प्राप्त हुए हैं जिनकी लेखन शैली में अनेक प्रकार की भिन्नता दृष्टिगत होती हैं जिसमें शंखाकार, छल्लेदार, हृदयाकार एवं दोहरी रेखा युक्त इत्यादि के आकार–प्रकार में मिले हैं, इन्हीं आकार–प्रकार के आधार पर सर्वप्रथम 1837 ई0 में जेम्स प्रिंसेप ने इसका नामकरण शंख लिपि किया। इस नाम पर बी0 छावडा, वोगल, के0पी0 जायसवाल इत्यादि जैसे विद्वानो ने भी अपनी सहमती दिया। इस लिपि के अभिलेखो की खोज सर्वप्रथम 1836 ई0 में जेम्स प्रिंसेप ने ही किया था। भारत में इसका विस्तार उत्तर में जम्मू काश्मीर के अखनूर से लेकर दक्षिण में कर्नाटक के सन्दूर तक तथा पूर्व में पश्चिम बंगाल के सुसुनियाँ से लेकर पश्चिम में गुजरात के जूनागढ़ तक दृष्टिगत होते हैं।

मुख्य शब्द– अभिलेख, शंख लिपि, बिहार, लेखन, संग्रहालय, बौद्ध धर्म, पुरालिपि, ब्राह्मी।

इन अभिलेखो के उपरोक्त अधिकाधिक विस्तार क्षेत्र को ध्यान में रखते हुए इस संक्षिप्त शोध पत्र में पूर्वी भारत से प्राप्त शंख लिपि के अभिलेखों का भौगोलिक व ऐतिहासिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया हैं। इस क्षेत्र के अन्तर्गत बिहार से लगभग 314 शंख लिपि के अभिलेख निम्नलिखित स्थलों से प्राप्त हुए हैं–

1. राजगीर : बिहार प्रान्त में गया जिले में आधुनिक राजगीर एक छोटा सा नगर है का प्राचीन नाम राजगृह था, यह मगध की प्रथम राजधानी थी। राजगृह का निर्माण बिम्बिसार (ईसा पूर्व छठी शताब्दी) तथा पुत्र अजातशत्रु द्वारा हुआ था। रामायण तथा महाभारत में राजगृह का दूसरा नाम गिरिव्रज मिलता है। महाभारत में इसे, वैराह, वराह, वृषभ, ऋषिगिर तथा चैत्यगिरि नामक पाँच पहाड़ियों से परिवेष्ठित कहा गया है। ह्वेनसांग के विवरण से ज्ञात होता है कि यह पुरी मगध की प्राचीन राजधानी थी तथा ऊँचे पर्वतों से घिरी हुई थी।[i] गौतम बुद्ध के समय राजगृह भारत का एक प्रसिद्ध नगर था, जिसकी परिधि तीन मिल के लगभग थी।[ii] गौतम बुद्ध के परिनिर्वाण के कुछ ही माह पश्चात् राजगृह में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ था। राजगृह के निकट जरासन्ध की राजधानी के ध्वंसावशेष मिले हैं। ह्वेनसांग ने राजगृह के प्राचीन स्थानों तथा स्मारकों की चर्चा की है। यहाँ पर उसने एक स्तूप को देखा था, जो अजातशत्रु द्वारा निर्मित कराया गया था। राजगृह राजनीतिक तथा धार्मिक केन्द्र के रूप में भी प्रसिद्ध था। यहाँ नागपूजा होती थी।

राजगृह शंख लिपि के अभिलेखों के लिए काफी प्रसिद्ध है। यहाँ इस लिपि में निबद्ध कुल 44 अभिलेख राजगीर के अलग–अलग स्थलों से प्रकट हुए है, इनमें रथमार्ग, सोन भण्डार तथा नालन्दा संग्रहालय में संग्रहित अभिलेखों का उल्लेख किया जा सकता है। इस स्थलों का स्वतन्त्र वर्णन निम्नलिखित है।

2. रथमार्ग : राजगीर से 8 किमी0 दक्षिण की दिशा में आधुनिक गया मार्ग पर वाणगंगा के समीप पहाड़ी का बहुत बड़ा खण्ड स्थित है, वर्तमान से उसे एक सुरक्षा दीवार से घेर दिया गया है। जिसे प्राचीन रथ मार्ग के नाम से जाना जाता है। 350 फीट लम्बा और 30 से 40 फीट चौड़ा मार्ग पूर्व की दिशा की ओर जाता है, और एक सकरा मार्ग पश्चिमी दीवार की तरफ है। इन्हीं दोनों मार्गों के मध्य भाग में शंख लिपि के 40 अभिलेख प्राप्त हुए हैं। इनमें से अधिकांश चार समूहों में विभक्त हैं– इनमें ए और बी दक्षिण पश्चिम कोने में अंकित हैं इस वर्ग में अभिलेख सं0 – 1 से 6 और साथ में 15 संख्या तक अभिलेखों को रखा जा सकता है। समूह सी0 और डी0 पश्चिमी दीवार के समीप द्रष्टव्य हैं। इनमें अभिलेख सं0 17 से 24 और 25 से 39 आर–पार क्रमशः उत्कीर्ण हैं। अभिलेख सं0 16 उत्तरी दीवार पर 120 फीट की दूरी पर एकल अंकित है। जबकि अभिलेख सं0 40 उत्तर–पश्चिम कोने में उत्कीर्ण है।[iii]

राजगीर के रथमार्ग पर अंकित उपर्युक्त अभिलेख दुर्भाग्य से अधिकांश क्षतिग्रस्त अवस्था को प्राप्त हो चुके हैं। रथमार्ग के कुछ अभिलेखों की सूचना मेजर किट्टो ने सर्वप्रथम दिया था।[iv]तत्पश्चात् जे0डी0 वेंगलर का ध्यान भी इन पर गया था। फिर कनिंघम के सहयोग से प्रकाशित किया गया।[v]उनके अनुसार विभिन्न अक्षर एक बड़े शंख लिपि के अवशेष हैं। लेकिन प्राप्त अभिलेखों पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता हैं कि ये सभी स्वतन्त्र अभिलेख हैं।

3. सोन भण्डार : राजगृह के निकट वैभार पहाड़ी के दक्षिणी कोड में उत्खनित दो गुफाएँ तीसरी चौथी शती ई0 में एक जैन साधु द्वारा बनवाई गयी थी, जैसा कि एक अभिलेख से ज्ञात होता है ''निर्वाण लाभाय तपस्वी योग्यै शुभै गृहे.....र्हत् प्रतिमा प्रतिष्ठै आचार्यरत्नं मुमिवैरदेव : विमुक्तये कारयत दीर्घतेजाः'' यह अभिलेख लिपि के आधार पर तीसरी चौथी शती ई0 का जान पड़ता है।[vi] कुछ विद्वानों का मत है कि वैभार पर्वत की सप्तपर्णि गुफा सोन भण्डार का ही दूसरा नाम है।[vii] सप्तपर्णि गुफा में

प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन बुद्ध की मृत्यु के पश्चात् हुआ था जिसमें 500 भिक्षुओं ने भाग लिया था। परन्तु उपर्युक्त अभिलेख संशय उत्पन्न करता है। राजगीर के इस प्रसिद्ध गुहा को 'सोन भण्डार' या 'स्वर्ण का भण्डार' कहा जाता है इसके दक्षिणी प्रवेश द्वार के समीप आठ या 9 अक्षरों से युक्त शंख लिपि का एक बड़ा अभिलेख उत्कीर्ण है। राजगीर के रथमार्ग की तुलना में यह अभिलेख काफी सुरक्षित अवस्था में दीवार पर लम्बवत् उत्कीर्ण है। शंख लिपि के अभिलेखों में यह लम्बा एवं सुरक्षित है।[viii]

स्थानीय परम्परा इस गुफा पर अंकित अभिलेख को धार्मिक मन्त्र मानती है, जिनके अनुसार इस मन्त्र के माध्यम से इस गुफा की सुरक्षा में पत्थर से निर्मित दरवाजे को खोला जा सकता है। इस संशय के समाधान हेतु भविष्य में अध्ययन की आवश्यकता है। जो लिपि के उद्वाचन पर निर्भर है।

4. नालन्दा संग्रहालय अभिलेख : नालन्दा दक्षिणी विहार में राजगीर के निकट स्थित है। इसके भग्नावशेष बड़ागाँव नामक ग्राम में दूर–दूर तक बिखरे हुए हैं। नालन्दा के अवशेषों को सुरक्षित रखने हेतु नालन्दा संग्रहालय की स्थापना की गयी। इस संग्रहालय में प्रस्तर की दो पटिया पर उत्कीर्ण शंख लिपि के तीन[ix] अभिलेख संग्रहित हैं। इनमें से दो एक पटिया पर उत्कीर्ण है। यद्यपि इन अभिलेखों के मूल स्थान के प्रति संशय है, किन्तु प्रथम पटिया पर उत्कीर्ण अभिलेख राजगीर के रथ मार्ग से प्राप्त हुआ था।[x] जबकि इस अभिलेख की लिखावट राजगीर से भिन्न शैली में है। यह शैली राजौना से प्राप्त अभिलेख सं0 1, 4 और 6 के सदृश दिखाई देती है।[xi]

नालन्दा संग्रहालय में संग्रहित शंख लिपि का तीसरा अभिलेख पत्थर की खण्डित पटिया पर चार अक्षरों के साथ उत्कीर्ण है। इस अभिलेख की प्राप्ति स्थान के विषय में निश्चित जानकारी का अभाव है। लेकिन ऐसी संभावना व्यक्त की जाती है कि इसे राजगीर में ही उत्कीर्ण किया गया होगा।[xii]

5. राजौना : बिहार के मुंगेर जिले में लखीसराय से 2 मील पश्चिमोत्तर राजौना नामक पुरास्थल स्थित है।[xiii] इस स्थल से पाटलिपुत्र की मूर्ति कनक शैली के सुन्दरतम् उदाहरण प्राप्त हुए हैं, जिसमें खण्डित दो स्तम्भ प्रमुख है। वर्तमान में ये दोनों स्तम्भ पुरातात्त्विक वीथिका इण्डियन म्यूजियम कोलकाता में संग्रहित है। संग्रहालय विवरण के अनुसार इसे (गुप्त काल ल0 5वी शती ई0) चण्डी मऊ बिहार नाम से प्रदर्शित किया गया है। स्तम्भ का निम्न भाग नितान्त सादा एवं वर्गाकार है। मध्य के दोनों ओर बाहर की ओर निकले हुए प्रक्षेप है। निचले प्रक्षेप के ऊपर एक पट्टक है, जो उभरे हुए चौखटे के अन्दर अंकित है। इसमें कैलाश पर भगीरथ की शिवपूजा, गंगावतरण, अर्जुन का शिव से वरदान प्राप्त करना आदि दृश्यों का सुन्दर अंकन है। प्रक्षेप के थोड़ा ऊपर अर्द्धवर्तुलाकार कीर्तिमुख तथा सुपर्ण जैसे परम्परागत विषयों को उत्कीर्ण किया गया है।[xiv]

राजौना से प्राप्त एक खण्डित स्तम्भ पर शंख लिपि के कुल छः अभिलेखों का अंकन दिखाई देता है। अभिलेख संख्या 1 व 2 स्तम्भ के निम्न भाग में सादे स्थान पर वाम भाग में उत्कीर्ण है। ये दोनों अभिलेख काफी सुरक्षित दशा में है। अभिलेख सं0 3 स्तम्भ ब के सम्मुख भाग में क्षैतिजाकार रूप में स्तम्भ के अलंकृत भाग पर उत्कीर्ण है। यह अभिलेख अस्पष्ट एवं धुँधला रूप में है। अवशिष्ट तीन अभिलेख सं0 4 स्तम्भ के दक्षिणी भाग में लम्बवत् अंकित है। इनमें 4 और 5 सुरक्षित दशा में जबकि 6 आंशिक रूप से खण्डित है।[xv]

राजौना से प्राप्त इस अभिलेख को अन्य स्थलों के अभिलेखों से तुलनात्मक अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि सं0 1, 2 4 और 6 सामान्यतया कोणाकार एवं जकड़ा हुआ सही ढंग से अंकित है। यह प्रक्रिया नालन्दा संग्रहालय में सुरक्षित पटिया ए और तिगवा के प्रथम और राजिम के अभिलेख सं0 4 में भी दिखाई देती है। राजौना और नालन्दा संग्रहालय के अभिलेखों के मध्य आपसी समानता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।[xvi] राजौना के इन अभिलेखों को कनिंघम ने अलंकारिक अक्षरों के नाम से सम्बोधित किया है।[xvii]

6. वैशाली : प्राचीन नगरी वैशाली के भग्नावशेष वर्तमान बसाढ नामक स्थान के निकट मुजफ्फरपुर से 20 मील दक्षिण–पश्चिम की दिशा में स्थित है। इस नगरी का प्राचीन नाम विशाला था जिसका उल्लेख वाल्मीकि रामायण में मिलता है। गौतम बुद्ध के समय तथा उनसे पूर्व लिच्छवि गणराज्य की यहाँ राजधानी थी। इसी स्थान पर अशोक एक प्रस्तर स्तम्भ स्थापित करवाया था। वैशाली के चतुर्दिक चार प्रसिद्ध चैत्य थे। बुद्ध के समय में वैशाली अत्यन्त समृद्धशाली नगरी थी। बौद्ध साहित्य में यहाँ की प्रसिद्ध गणिका आम्रपाली के विशाल प्रासाद तथा उद्यान का वर्णन मिलता है। इसने तथागत गौतम बुद्ध से धर्म की दीक्षा ग्रहण कर ली। जैनों के अन्तिम तीर्थंकर महावीर भी वैशाली के ही राजकुमार थे।

वैशाली में अशोक द्वारा स्थापित उपर्युक्त स्तम्भ पर शंख लिपि के पाँच अभिलेखों को उत्कीर्ण किया गया है।[xviii] अभिलेख सं0 1 और दो क्षैतिजाकार रूप में स्तम्भ के पश्चिमी सतह पर उत्कीर्ण है। ये दोनों अभिलेख स्वच्छ रूप में उत्कीर्ण सुरक्षित दशा में हैं। स्तम्भ के दक्षिणी सतह पर अभिलेख सं0 3 क्षतिग्रस्त अवस्था में द्रष्टव्य है। इसका प्रथम अक्षर जमीन की सतह से ऊपर दिखाई देता है। इसके सामानान्तर की सतह पर तीन अतिरिक्त अक्षरों का अंकन हुआ है इस प्रकार यह चार अक्षरों के संयोजन से उत्कीर्ण था।

संख्या 3 के थोड़ा पूर्व अभिलेख सं0 4 सम्पूर्ण रूप से चार अक्षरों से युक्त धुँधला अस्पष्ट रूप से अंकित है। अभिलेख सं0 5 स्तम्भ के दक्षिण–पूर्व सतह पर शंख लिपि के सात अक्षरों में संयोजित कर उत्कीर्ण किया गया है।

कनिंघम ने इस स्तम्भ के चारों तरफ उत्खनन करवाया था।[xix] अपने संक्षिप्त प्रतिवेदन में इसे अद्‌भूत अलंकारिक अक्षर शंख आकार के नाम से सम्बोधित किया है। जबकि मेजर किट्‌टो इसे चीनी अक्षरो' के रूप में पहचान करते हैं।

7. लौरिया अरराज : बिहार प्रान्त के पूर्वी चम्पारन जिले में मोतीहारी से 18 मील दक्षिण पश्चिम की ओर स्थित है। इस ग्राम से एक मील दूर अशोक का शिला स्तम्भ स्थापित है। जिस पर मौर्य सम्राट के छः अभिलेख अंकित है। यह स्तम्भ 37 फुट ऊँचा है। इसका शीर्ष नष्ट हो गया है, किन्तु जान पड़ता है कि इस स्तम्भ के शीर्ष पर अवश्य ही इन पशुओं (वृष, सिंह, अश्व या गज) में से किसी की मूर्ति रही होंगी। स्तम्भ का अभिलेख दो भागों में उत्कीर्ण किया गया है, पहला उत्तर की ओर 18 पंक्तियों में और दूसरा दक्षिण की ओर 23 पंक्तियों में है।

लौरिया अरराज के इस सातवें स्तम्भ राजाज्ञा लेख के अतिरिक्त शंख लिपि के तीन उत्तम अभिलेख उत्कीर्ण हैं। अभिलेख सं0 1 लम्बवत् रूप में स्तम्भ के दक्षिण दिशा की तरफ उत्कीर्ण है। शंख लिपि के अन्य अभिलेखों की तुलना में काफी महत्वपूर्ण है। इसका मध्यवर्ती छठा या सातवाँ अक्षर काफी सूक्ष्म रूप में लगभग एक इंच की ऊँचाई में उत्कीर्ण है। अभिलेख के चौथे अक्षर से गोलाई युक्त चक्राकार लिपि विभिन्न आकार एवं प्रकार में अनावश्यक रूप में सभी दिशाओं में निस्सारित है।

अभिलेख सं0 2 स्तम्भ के पूर्वी भाग में लम्बवत् उत्कीर्ण है। यद्यपि इसमें अलंकरण का अभाव दिखता है। इसकी तुलना भरहुत से प्राप्त अभिलेख सं0 2 से की जा सकती है।[xx] अभिलेख सं0 3 क्षैतिजाकार रूप में छः अक्षरों से युक्त स्तम्भ के उत्तरी सतह पर अंकित है। सूक्ष्म अक्षरों से संयोजित सकरे एवं जकड़े हुए कोणाकार आकार से युक्त यह अभिलेख अन्य स्तम्भों पर अंकित अभिलेखों के काफी समीप है और कभी–कभी नालन्दा पटिया तथा राजौना के अभिलेखों का स्मरण कराता है।[xxi] लौरिया अरराज स्तम्भ पर अंकित शंख लिपि का यह अभिलेख अशोक स्तम्भ पर अंकित सातवाँ दृष्टान्त है।

वैशाली अभिलेख के सन्दर्भ में लौरिया अरराज के इस अभिलेख की संक्षिप्त चर्चा कनिंघम ने किया था।[xxii] जिसे उन्होंने अलंकारिक अक्षर अथवा चिन्ह के रूप में उल्लेख किया है। जबकि जेम्स प्रिंसेप ने शंख आकार के अक्षर से उद्‌बोधन किया है।[xxiii]

8. बिहार सरीफ : बिहार के नालन्दा जिले में स्थित बिहार सरीफ नामक स्थल से प्राप्त गुप्तकालीन स्तम्भ पर शंख लिपि के तीन अभिलेख उत्कीर्ण हैं। वर्तमान में यह स्तम्भ बिहार के राजकीय संग्रहालय पटना में सुरक्षित है। शंख लिपि के अतिरिक्त इस स्तम्भ पर खण्डितावस्था में गुप्तकालीन[xxiv] ब्राह्मी लिपि का अभिलेख और 19वीं सदी ई0 का अंग्रेजी में उत्कीर्ण एक अभिलेख प्राप्त हुआ है। यह स्तम्भ संग्रहालय के बरामदे में फर्श पर पड़ा हुआ है। स्तम्भ पर शंख लिपि के तीनों अभिलेख लम्बवत् रूप में ऊपर से नीचे तक उत्कीर्ण है।

अभिलेख सं0 1 स्तम्भ के ऊपरी भाग में दाहिने की तरफ उत्कीर्ण है। छः अक्षरों में समायोजित यह अभिलेख स्वच्छ एवं पूर्ण रूप में सुरक्षित है। इसके अक्षर गोलाकार रूप में राजौना के अभिलेख सं0 5 के समतुल्य है।[xxv] अभिलेख सं0 2 स्तम्भ के निम्न भाग में दाहिने तरफ उत्कीर्ण है। सम्पूर्ण रूप से सुरक्षित यह अभिलेख धुँधलापन लिए हुए है फिर भी इसके अधिकांश भाग काफी स्पष्ट हैं। अभिलेख के समस्त अक्षरों को सावधानीपूर्वक गोलाकार रूप में उत्कीर्ण किया गया है। उत्कीर्णन की यह प्रवृत्ति बहुसंख्यक अभिलेखों में दिखाई देती है। इस प्रकार की पुनरावृत्ति एरण से प्राप्त अभिलेख सं0 2, 4 एवं 7 में दिखाई देती है।[xxvi] अभिलेख संख्या–3 स्तम्भ के आधार भाग पर दाहिनी ओर आंशिक रूप से मिटे हुए गुप्तकालीन अभिलेख के समीप उत्कीर्ण है। शंख लिपि का यह अभिलेख गुप्त अभिलेख के चित्र में दिखाई देता है।[xxvii] यह अत्यन्त क्षतिग्रस्त एवं अस्पष्ट रूप में है। बिहार सरीफ से प्राप्त यह अभिलेख पुरातत्व सर्वेक्षण की वार्षिक आख्या[xxviii] एवं भारतीय एपिग्राफी की वार्षिक आख्या[xxix] में प्रतिवेदित है।

9. नागार्जुनी गुहा : बिहार में गया जिले के पूर्वी भाग में स्थित यह गुहा महायान बौद्ध के प्रसिद्ध आचार्य नागार्जुन के नाम पर प्रसिद्ध है। इनका समय द्वितीय शती ई0 माना जाता है। इस गुहा में मौखरी नरेश अनन्त वर्मन का एक तिथि विहीन लेख उत्कीर्ण है, अभिलेख का उद्‌देश्य अनन्त वर्मन द्वारा इस गुहा मंदिर में भूतपति शिव तथा देवी पार्वती की अर्द्धनारीश्वर मूर्ति की प्रतिष्ठापना का उल्लेख है। अनन्त वर्मन का ही एक अन्य अभिलेख भी इस गुहा में अंकित हैं, जिसमें उसके द्वारा कात्यायनी देवी की एक प्रतिमा के प्रतिष्ठापन तथा उसके लिए एक ग्राम के दान का उल्लेख हैं ये दोनों अभिलेख 7वीं शती ई0 के हैं।

नागार्जुनी गुहा से प्राप्त शंख लिपि के दो अभिलेखों की सूचना जेम्स प्रिंसेप ने दी है।[xxx] जिसे उसने ''पढी न जा सकने वाली अपरिष्कृत' शैली की लिखावट कहा है।

10. देववरनार्क : बिहार के भोजपुर (वर्तमान में शाहाबाद) जिले में स्थित सूर्य मंदिर के स्तम्भ पर शंख लिपि का एक अभिलेख उत्कीर्ण है। देववरनार्क ग्राम से गुप्त नरेश जीवितगुप्त द्वितीय (स0 700 ई0) का महत्वपूर्ण अभिलेख प्राप्त होता है। इसमें वरुणिक ग्राम (देववरनार्क का प्राचीन नाम) का वरुणवासिन अथवा सूर्य मंदिर में दान दिये जाने का उल्लेख है। अभिलेख में गुप्त नरेशों की वंशावली दी गयी है, जिसमें कई परवर्ती गुप्त राजाओं तथा उनसे सम्बद्ध मौखरि शासकों के नाम मिलते हैं।

जिनमें देवगुप्त जिसके सम्बन्ध से वाकाटक राजाओं के काल निर्धारण में सुगमता होती है। बालादित्य जिसने हूण राजा मिहिरकुल से युद्ध किया था। इसके साथ ही मौखरी नरेश सर्ववर्मन तथा अवन्ति वर्मन का उल्लेख मिलता है।

देववरनार्क स्थित मुख्य मंदिर के सम्मुख भाग में निर्मित चार स्तम्भों में से एक स्तम्भ के ऊपरी भाग पर शंख लिपि का अभिलेख उत्कीर्ण है। यह वही स्तम्भ है। जिस पर परवर्ती गुप्त शासक जीवितगुप्त का प्रसिद्ध अभिलेख अंकित है। यद्यपि स्तम्भ की सतह भद्दी शक्ल में है। फिर भी शंख लिपि का यह अभिलेख 5 अक्षरों के साथ स्पष्ट एवं सुरक्षित दशा में है।

शंख लिपि के ठीक नीचे 'सिद्धमात्रिका' लिपि के दो अभिलेख अंकित हैं।[xxxi] इनमें एक को दिनेशचन्द्र सरकार ने 'सूत्रधारा' पढ़ा है।[xxxii] इसके ऊपर अन्य दूसरा खण्डितावस्था में 'स' 'क' स्पष्ट होता है।

11. खेरी : बिहार के भागलपुर जिले में भागलपुर से 16 मील दक्षिण–पश्चिम ऐतिहासिक शाहकुण्ड नामक गाँव स्थित है। उसके पास खेरी नामक पहाड़ी से शंख लिपि के कुल 34 अभिलेख पहाड़ी और उसके चढ़ाई वाले रास्ते से प्राप्त हुए हैं। प्राप्त अभिलेखों का वर्णन निम्नवत् है–

1. पहाड़ी के पूर्वी दिशा की चढ़ाई से अभिलेख सं0 1–11 प्राप्त हुए है।
2. पहाड़ी के उत्तरी चढ़ाई के शीर्ष भाग पर अभिलेख 12 से लेकर 20 तक की संख्या में उत्कीर्ण हैं।
3. पहाड़ी के ऊपरी सतह पर 21 से लेकर 23 की संख्या में उत्कीर्ण अभिलेख दृष्टिगोचर होते हैं।
4. पहाड़ी के दक्षिणी दिशा में चढ़ाई की चोटी पर अभिलेख सं0 32 से लेकर 34 तक का अंकन दिखाई देता है।

दुर्भाग्य से राजगीर एवं अन्य स्थलों से प्राप्त बहुसंख्यक शंख लिपि के अवशेष दयनीय खण्डितावस्था अथवा घिसे हुए जीर्ण अवस्था को प्राप्त हो चुके हैं। खेरी की पहाड़ी पर उत्कीर्ण शंख लिपि के अधिकांश अभिलेख कुछ कम या कुछ अधिक विनष्ट हो चुके हैं। लेकिन इसमें से कुछ अभिलेख जैसे सं0 23 और 34 काफी सुरक्षित दशा में हैं।[xxxiii]

खेरी के दो अभिलेख 8 और 30 में काफी समानता है, यद्यपि उसकी शैली भिन्न है। खण्डित अभिलेख सं0 5 में उपर्युक्त समानता दृष्टिगोचर होती है। पहाड़ी के ऊपरी सतह से शंख लिपि के अभिलेख 24 और 25 के मध्य अलंकारिक रूप में ब्राह्मी अक्षर के सदृश एक अभिलेख उत्कीर्ण है। इस प्रकार के अभिलेख शंख लिपि के वाक्यों के मध्य जोड़ने वाले भाग में प्रायः पाये जाते हैं। इस संदर्भ में (शालिहुण्डम्, उदयगिरि, राजौना और चुनार) का उल्लेख किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त पहाड़ी के चोटी से शंख लिपि के अभिलेख सं0 26 और 27 के मध्य लगभग द्वितीय शती ई0पू0 का प्रारम्भिक (आर के ईक) ब्राह्मी लिपि का एक लम्बा अभिलेख उत्कीर्ण है। जिसे वेंगलर और कनिंघम ने 'धम्म' पाठ पढ़ा है, जबकि मूल पाठ 'मधु' है।[xxxiv] उपर्युक्त अभिलेख से ज्ञात होता है कि यह स्थल पुरातात्त्विक दृष्टि से परवर्ती काल में भी काफी महत्त्वपूर्ण था।

खीरी पहाड़ी से भवन संरचना के खण्डित बिखरे अवशेषों के आधार पर कनिंघम ने इसकी पहचान एक किले के रूप में किया है। लेकिन राबर्ट माण्टगोमरी मार्टिन[xxxv] इसे मंदिर स्थल के रूप में सम्बोधित किया है। क्योंकि यहाँ से बहुसंख्यक शंख लिपि के अभिलेखों की उपस्थिति इस स्थल के धार्मिक स्वरूप को उजागर करते हैं। इसके अतिरिक्त किले के सन्दर्भ में प्रस्तुत पहाड़ी का छोटे स्वरूप सामरिक दृष्टि से उपयुक्त नहीं है।

वेंगलर और कनिंघम ने खेरी पहाड़ी से ब्राह्मी एवं शंख लिपि के 22 अभिलेख की सूचना दी है।[xxxvi] तत्पश्चात् भारतीय पुरालिपि के वार्षिक पत्रिका में यहाँ से 25 की संख्या में शंख लिपि के अभिलेख प्रतिवेदित हैं।[xxxvii]

12. मुण्डेश्वरी पुरास्थल : मुण्डेश्वरी धाम से प्राप्त अन्य अवशेषों के साथ लघु अभिलेखों का अध्ययन होता रहा। इस क्रम में 1971 ई0 में सी0आर0पी0 सिन्हा द्वारा कुछ लघु अभिलेखों का अध्ययन किया गया वर्तमान में यह अभिलेख पटना संग्रहालय में सुरक्षित है। अध्ययन की अगली कड़ी में रिचर्ड सोलोमन ने मुण्डेश्वरी से प्राप्त 165 अभिलेखों, इनमें 8 अभिलेख ब्राह्मी लिपि के 32 अभिलेख अलंकृत ब्राह्मी और 116 शंख लिपि तथा पटना संग्रहालय में सुरक्षित शंख लिपि के 9 अन्य अभिलेख मिले हैं।

---

1. वाटर्स; *ऑन युवान च्वाँग ट्रेवेल्स इन इण्डिया*, भाग–2, पृ0 148
2. रिज डेविड्स; *बुद्धिस्ट इण्डिया*, पृ0 37
3. सोलोमन आर0; *पूर्वोक्त*, पृ0 7
4. *जर्नल ऑफ रॉयल एशियाटिक सोसायटी*, 1849, पृ0 960, प्ले0 43
5. *आर्कियोलॉजिक सर्वे ऑफ इण्डिया,* एनुअल रिपोर्ट, 1872–73, पृ0 86
6. माथुर विजयेन्द्र कुमार; *ऐतिहासिक स्थानावली*, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर (द्वितीय संस्करण), 1990, पृ0 987–88

7. कनिंघम; *आर्कियोलॉजिकल सर्वे रिपोर्ट*, जि0–3, पृ0 140

8- *आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया*, एनुअल रिपोर्ट, 1933–34, पृ0 31, प्लेट XI

9. *एनुअल रिपोर्ट ऑफ इण्डियन एपिग्राफी*, 1956–57, पृ0 47, नं0 78

10. *आर्कियोलॉजिक सर्वे ऑफ इण्डिया*, एनुअल रिपोर्ट, 1933–34, पृ0 17

11. आर0सोलोमन; *पूर्वोक्त*, पृ0 9

12. कनिंघम; *आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया,* एनुअल रिपोर्ट, III, 1871–73, पृ0 173

13. *वही*, पृ0 9

14. *एज ऑफ दि–इम्पीरियल गुप्ताज*, पृ0 192

15. सोलोमन, आर0; *पूर्वोक्त*, पृ0 18

16. *वही*, पृ0 18

17- कनिंघम, *पूर्वोक्त,* पृ0 154, प्ले0 XIV

18. आर0सोलोमन, *पूर्वोक्त*, पृ0 22

19. *आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया*, एनुअल रिपोर्ट, 1862–65, पृ0 85।

20. आर0 सोलोमन; *पूर्वोक्त*, पृ0 25

21. *वही*, पृ0 26

22. *आर्कियोलॉजिकल सर्वे;* एनुअल रिपोर्ट I, पृ0 68

23. आर0सोलोमन, *पूर्वोक्त*, पृ0 26

24. *कार्पस इन्सक्रिप्शनम् इण्डिकेरम,* वाल्युम–III पृ0 47–52

25. आर, सोलोमन; *पूर्वोक्त*, पृ0 26

26. *वही*, पृ0 26

27- *कार्पस इन्सक्रिप्शनम् इण्डिकेरम्*, वाल्युम–III, प्ले0 VII

28. *आर्कियोलॉजिक सर्वे ऑफ इण्डिया*, एनुअल रिपोर्ट; 1960–61, पृ0 69, न'0 196–197

29. *एनुअल रिपोर्ट ऑफ इण्डियन एपिग्राफी*, 1962–63, पृ0 246, न0 4484

30- *जर्नल ऑफ एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल*, वाल्युम VI, 1837, पृ0 676–679, प्ले0 XXXV

31. सोलोमन, आर0; *पूर्वोक्त*, पृ0 31

32. *एनुअल रिपोर्ट ऑफ इण्डियन एपिग्राफी*, 1960–61, पृ0 70, नं0 209

33. वेंगलर एवं कनिंघम, *ए0एस0आई0ए0आर0*, VIII, 1879–73, पृ0 128–129

34. आर0सोलोमन; *पूर्वोक्त*, पृ0 10

35. *हिस्ट्री एण्टीक्वीज टोपोग्राफी एण्ड स्टैटिसटिक्स ऑफ ईस्टर्न इण्डिया*, वाल्युम II, पृ0 57–58; सोलोमन; *पूर्वोक्त*, पृ0 10

36. *ए0एस0आई–ए0आर0*; वाल्युम III, 1972–73; पृ0 128–29

37. *ए0आर0आई0ई0*; 1953–54, पृ0 30; और 1955–56, पृ0 31